

## सर्वशक्तियों व सर्वगुणों के मर्म को जानें...

जैसे सामान्य व्यक्ति भी अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताओं का स्टॉक अपने पास जमा रखता है, एक हफ्ते के लिए, महीने के लिए व साल भर के लिए। ताकि उसके जीवन की जरूरतें समय पर पूरी हो सकें। एक यात्री जब कहीं जाता है तो भी अपनी जरूरी चीजों को अपने साथ ले जाता है ताकि उसकी यात्रा चाहे दो दिन की हो, चाहे तीन दिन की, चाहे महीने भर की, उसमें उन आवश्यक चीजों की कमी महसूस न हो। लेकिन जिन्होंने श्रेष्ठ और महान बनने की राह को चुना है और सही अर्थ में पहचाना है, वे भी आवश्यक स्टॉक जमा कर जीवन की आगे की यात्रा को सुगम बनाते हैं। अगर हम महान बनने की दिशा में अग्रसर हैं, तो हमें भी आवश्यक स्टॉक जमा करना ही होगा। जब हम कहते हैं और



राजयोगिनी ब. क. गार्ग

बाबा ने भी हमें सुनाया है कि तुम्हारा एक छोटा-सा ये जन्म बहुत मूल्यवान है। सारे कल्प में सुख, शांति और समृद्धि बनी रहे, उसके लिए स्टॉक जमा करने का समय अभी ही है। बाबा ने कहा, तुम मास्टर सर्वशक्तियुक्त हो, जो चाहे आप शक्तियों का स्टॉक जमा कर सकते हो। महान वो है जो सर्वशक्तियों से स्टॉक को सम्पन्न कर दे, भरपूर कर दे ताकि जीवन में आने वाली चुनौतियों, परिस्थितियों और उलझनों में उन शक्तियों का प्रयोग कर आगे बढ़ सकें। अगर शक्तियों का स्टॉक पर्याप्त नहीं होगा तो परिस्थितियों के वश हो जायेंगे, निर्बल हो जायेंगे और रुक जायेंगे।

देखा जाये तो देवताओं की महिमा में भी गाते हैं, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म। लेकिन यहां समझने की बात यह है कि देवताओं को सर्वशक्ति सम्पन्न नहीं कहा गया है, सर्वगुण सम्पन्न कहा गया है। इस मर्म को अच्छी तरह से समझना है। जैसे कहते हैं, ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। ब्राह्मण माना परमात्मा को पहचानना, परमात्मा द्वारा दी गई श्रीमत् अनुरूप जीवन को ढालना और चलना, उसी को ब्राह्मण कहेंगे। फरिश्ता माना सर्वशक्तियों से सम्पन्न, परमात्म कार्य को धरा पर साकार करना और निर्बल की सहायता करना, मदद करना। तो ब्राह्मण जो परमात्मा द्वारा प्राप्त शक्तियों का जीवन में प्रयोग और उपयोग करते हैं तो वे गुण बनते हैं। जैसे किसी को हम देखते हैं तो कहते हैं कि ये शांत है। शांति को शक्ति भी कहते हैं और शांति को गुण भी कहते हैं। क्योंकि लगातार व्यक्ति शांति के सागर की शांति का प्रयोग अपने जीवन में करता है तो वो गुण बन जाता है। ऐसे ही प्रेम के सागर परमात्मा के प्रेम की शक्ति का प्रयोग अपने जीवन में करता है तो वो प्रेम के गुण के रूप में परिवर्तित होता है। सबके लिए प्रेम उसकी एक निजी सम्पत्ति बन जाती है। कैसी भी परिस्थिति हो, कैसी भी बात हो, लेकिन एक उस शक्ति की मास्टरी होने के कारण वो सील बन जाता है, उसी में निपुण बन जाता है, सम्पूर्ण बन जाता है। तब तो हम कहते हैं कि ये व्यक्ति तो जैसे शांत मूर्त है, प्रेम स्वरूप है। इसी तरह हमें एक-एक शक्ति को गुणों में परिवर्तित करना है अर्थात् उस शक्ति का यथार्थ रूप में उपयोग व प्रयोग करते हुए उच्चता को बनाये रखना है और सदा बनाये रखना है, तभी हमें वो पदवी व डिग्री मिलती है गुणों (वर्च्युज) की। तब हम देवता बनते हैं। ये कार्य, ये स्टॉक जमा करने का समय अभी ही है जबकि परमात्मा हमारे साथ है और वो हमें देवता बनाने के लिए ही आया है। कैसे बनेंगे, उसकी विधि भी हमें बता रहा है और हमारी हर तरह से पालना, मार्गदर्शन कर रहा है, यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। इसका लाभ जो ले लेगा वो लक्की स्टार बन जायेगा। स्टार वही बनता है जिसके पास ऐसा स्टॉक है। तो आइये, हम सभी इस तरह से परमात्मा के निर्देशन में स्वयं को संवारे, सजायें और उन्हीं के अनुरूप स्टार बनकर हम अपने पूरे कल्प के स्टॉक को जमा करें। अभी नहीं तो कभी नहीं। ये कभी नहीं भूलना।

## श्रीमत् समझकर सहना और समाना है

कड़ियों में सहनशक्ति है, सहन करते रहते हैं। लेकिन सहन करना भी दो प्रकार से होता है। एक होता है मजबूरी से सहन करना, एक होता है बाबा की आज्ञा से कि तुमको सहनशीलता धारण करनी है। तो अगर हम बाबा की आज्ञा मानते हैं तो उसकी खुशी हमारे अन्दर आ जाती है। और मजबूरी से करते हैं तो अंदर रोते रहेंगे, बाहर से सहन करते रहेंगे। उसका फल नहीं मिलेगा, खुशी नहीं होगी। और सचमुच बाबा की श्रीमत् समझकर हमने सहन किया तो उसी समय खुशी होती है। भले लोग समझें कि इसकी हार हुई, इसकी जीत हुई। लेकिन वह हार भी हमको खुशी दिलाती है, क्योंकि मैं परमात्मा के आगे तो ठीक रही। चलो उसने मेरे को समझा कि यह तो ढीली है, यह तो सामना कर ही नहीं सकती है। इसने हारा मैंने जीत लिया। चलो जीत लिया लेकिन परमात्मा के आगे तो मैंने जीता ना! आत्मा के आगे हारा, परमात्मा के आगे जीता। आखिर साथ मेरे को परमात्मा देगा या क्रोध आत्मा देगी? उसमें तो मैं पास हो गयी ना! तो बाबा की आज्ञा समझ करके अगर हम ठीक चलते हैं तो उसका फल जरूर मिलता है। उसी समय हमको खुशी होती है वाह! बाबा ने



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

मेरा नहीं है तो 'मैं-पन' भी खत्म। मैं-पन ही तो सारा नुकसान करता है। मैंने किया, मैं बहुत गुणवान हूँ, मेरे में यह बहुत शक्ति है, मेरे में शक्ति आयी कहाँ से? पहले थी क्या! परमात्मा की देन है।

कितनी शक्ति दी हम जीत गये और उसमें अहम नहीं। मैं बहुत होशियार हो गयी, नहीं। बाबा ने शक्ति दी, बाबा की देन है, प्रसाद है। प्रसाद को कोई अपना नहीं समझता है। चाहे बनाने वाली वही माता हो, उसी ने भोग लगाया हो, लेकिन प्रसाद जब हो गया तो कोई नहीं कहेगा मेरा है। बांट रही हूँ। मेरा नहीं है तो 'मैं-पन' भी खत्म। मैं-पन ही तो सारा नुकसान करता है। मैंने किया, मैं बहुत गुणवान हूँ, मेरे में यह बहुत शक्ति है,

मेरे में शक्ति आयी कहाँ से? पहले थी क्या! परमात्मा की देन है। तो बाबा-बाबा कहते चलो, बाबा ने यह दिया, बाबा ने यह दिया...। बस, बाबा दिल से निकले तो बड़ा पार। और कुछ बोल नहीं सकते हो, एक प्वाइंट भी रिपीट नहीं कर सकते हो लेकिन दिल से बाबा-बाबा कहते रहते हो तो आप नम्बर ले लेंगे, क्योंकि बाबा शक्तियां देगा, समय पर मदद करेगा, मैं सच्ची दिल से बाबा का हूँ, तो सच्ची दिल पर साहिब राजी जरूर होगा। बंधा हुआ है मेरी सच्चाई पर। मुझे नहीं देगा तो किसको देगा और वह दाता है, उसको क्या कमी है जो हमको न देवे। इसीलिए बाबा कहते हैं वर्तमान समय जो बातें हैं, उन्हें रियलाइज करो। रियलाइज अपने को करना है दूसरे को नहीं क्योंकि बाबा ने एक बार कहा है कि हमारे बच्चों की दूर की आँख बहुत तेज है, नज़दीक की आँख थोड़ी धुंधली है, वह तेज नहीं है। अपने को देखने की आँख हिलती है और दूसरे को देखने की, दूर की नज़र बड़ी तेज है। दूसरे की कमी को मैं बढ़ाऊंगी, विस्तार भी करूंगी, रामकथा बनाके सुनाऊंगी। लेकिन अपनी कमी छिपाऊंगी, दबाऊंगी तो ये सेल्फ रियलाइज तो नहीं हुआ ना!

## त्यर्थ संस्कारों को परिवर्तन कैसे करें...!

**प्रश्न : संस्कारों को बदली किया जा सकता है या नहीं? किस आधार पर हम परख सकते हैं कि मेरे संस्कार ठीक हैं?**

**उत्तर :** ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। हम संस्कारों को ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। जहाँ परखने की बात है वह तो सहज है। यूँ तो अपने संस्कारों को जान सकते हैं परन्तु फिर भी समझें नहीं पता पड़ता तो जैसे किसके गुण वर्णन करते हैं - फलाने में यह यह गुण हैं, तो देखना है मेरे में वे गुण हैं? इसको कहा जाता है अपने को परखना। अगर मैंने अपने संस्कार को जान लिया तो फिर उसको ज्ञान से परिवर्तन करना है। परिवर्तन किया तो उसको

कहा जायेगा रियलाइज किया। अगर परिवर्तन नहीं किया तो कहेंगे पूर्ण रूप से रियलाइज नहीं हुआ है। जिस संस्कार को मैंने रियलाइज किया कि यह ठीक है, वह देखना है- सबको ठीक लगता है? यदि औरों को वह ठीक नहीं लगता तो उसे ठीक नहीं कहेंगे। हम देखते हैं यह मेरा संस्कार औरों को रूकावट डालता है तो समझना चाहिए इसको बदलना जरूरी है। अब उसको बदलने के लिए ज्ञान की शक्ति चाहिए। एक है अपने से रियलाइज करना, दूसरा है कि दूसरे हमको रिजल्ट में राइट नहीं समझते हैं तो रियलाइज माना मैं उसको चेंज करूँ।

यदि हमारा संस्कार सर्विस का सबूत नहीं देता है तो इसका मतलब कि वह संस्कार हमारा ठीक नहीं है उसको हमें बदलना है। नहीं बदलते तो ज्ञान से रियलाइज नहीं किया है। हमें संस्कार को उस दृष्टि व उस अन्तर में देखना है कि सर्विस करता है व नुकसान करता है।

**प्रश्न : कई बार ऐसा होता है कि अपने को परख भी लेते परन्तु फिर निर्णय नहीं कर सकते। उसको क्या कहा जाये?**

**उत्तर :** इसे ज्ञान की कमी ही कहेंगे। इस कमी को भरने के लिए रोज जो बाबा की मुरली, बाबा की शिक्षाएँ, समय-समय पर जो बाबा युक्तियां बतलाते हैं उन्हें स्वयं प्रति समझकर उसकी गहराई में जाओ। लक्ष्य हो कि यह बाबा का एक-एक रत्न मुझे प्रैक्टिकल में लाना है। इस प्रकार अटेन्शन रखने से भी कमी भर सकती है।

ज्ञान की कमी को भरने के लिए जो शक्ति चाहिए उसके लिए मैं समझती हूँ एक तो बाबा की मुरली बहुत जरूरी है और दूसरा जो ऐसा शक्तिशाली हो उसके संग से भी खुद में शक्ति भर सकते हैं। जितना-जितना उसके संग में

कर्तव्य करते जायेंगे तो अपने में शक्ति भरती जायेगी। हरेक कमजोरी को मिटाने के लिए मैं समझती हूँ रूहानी नशा जरूर चाहिए।

**प्रश्न : अपने में निर्बलता व कमजोरी उत्पन्न ही न हो उसके लिए क्या करना चाहिए?**

**उत्तर :** इसके लिए अमृतवले के योग और मुरली पर पूरा-पूरा ध्यान दो। कभी भी किसी भी कारण से यह मिस न हो। दूसरा - कभी भी अपनी कमजोरी का वर्णन न करो, सदा अपनी हिम्मत को देखो। अपनी हिम्मत पर निश्चय। निश्चय और बाबा-बाबा की धुन लगी हुई हो तो निर्बलता का खात्मा होता जायेगा। मेरा बाबा बैठा है। हर बात में मुझे बाबा जरूर मदद करेगा। बस, बाबा बैठा है फिर क्या।

दृढ़ संकल्प कमजोरी को मिटा देता है। दृढ़ संकल्प करो कि मुझे करना है तो देखो कर लेंगे। दृढ़ संकल्प किया कि हमें स्वराज्य लेना है तो ले ही लिया ना। हम तो सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे हैं, हमारा दृढ़ संकल्प है हमें विश्व का कल्याण करना ही है, तो हम क्यों नहीं कर सकते। है सारी दृढ़ संकल्प की बात।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हमारी जैसी गुड मॉर्निंग आज की दुनिया में किसी की नहीं होती। सवेरा होते ही माँ-बाप जगाते हैं। परमात्मा माँ के रूप में जगाता है। हम बच्चे इतने अच्छे हैं सेकण्ड में जग जाते हैं। बार-बार नहीं कहना पड़ता है- उठो-उठो। इशारा करता है, उठो बच्ची बस आँख खुल जाती है। माँ अगर ठीक तरह से बच्चों को न जगाये तो बाप

खींचते और बरसाते हैं। सिर्फ सूर्य अपनी किरणों फेंकता रहे तो सृष्टि जल जाये। इसलिए किरणों से पानी खींचते हैं, फिर बरसता है। इतना बारिस करते हैं जो ठण्डक आ जाती है, किचड़ा साफ हो जाता है, हरियाली फैल जाती है, स्वच्छ पानी मिल जाता है। हम कौन हैं, पूछो अपने आप से। बाबा कहता है आओ मेरे बच्चे,

## हमारे जैसा भाग्य और किसी का कहाँ...!

आँख दिखायेगा। बच्चों को जगाती नहीं हो। बच्चे उठेंगे, बाप को याद करेंगे तो बाप खुश होगा। ऐसे मात-पिता सारे कल्प में नहीं मिलते हैं।

आज बाबा ने कहा है बच्चे महाभारत लड़ाई लगनी है, बॉम्ब छूटने हैं, बाढ़ें आनी हैं। यह सब समाचार अभी सुन और देख रहे हैं। बाबा ने पहले से ही सब बता दिया है।

लोगों का सारा पैसा बॉम्ब बनाने, मारने और मरने में जा रहा है। काम और क्रोध की अपस

में बहुत अच्छी दोस्ती है। ये दोनों ही पूरी दुनिया को नर्क बनाने वाले हैं। लोभ और अहंकार भी साथ में हैं। परन्तु बाबा हमको कहते हैं, योग अग्नि, लगन की अग्नि ऐसी अन्दर से हो जो खुद योगी का अंग-अंग शीतल हो जाए, तपत बुझती जाए, औरों को अपना रंग देता जाए। लगन की अग्नि से योगी के अंग शीतल हो जाते हैं। सूर्य की किरणों से, बादल सागर से पानी

बादल आओ। मैं देखती हूँ, ऐसा नशा ही नहीं चढ़ता है कि मैं कौन हूँ!

अरे एक घण्टा तपस्या में बैठो, बुद्धि और कहीं नहीं जाये, सेवा में भी नहीं, भले कुछ खाओ नहीं। कराची में चार-चार घण्टा लगातार बैठते थे, हिलने की भी मना थी।

अभी देखो जहाँ-तहाँ बीमारियों का कारण पानी है और खाने के लिए देखो शो वाली चीज हैं, उसमें कोई ताकत नहीं है। सब कुछ झूठ है, सच तो है ही नहीं। मन में भी झूठ, सोचने और बोलने की आदत है। सच सुनना और सच सुनाना। तुम राजाई पाते हो, सच सुनते हो और सच सुनाते हो। उसके बीच में क्या सोचते हो। बीच में कोई काम भी याद आया तो झूठ मिक्स हो जाता है। मुरली सुनते अगर कोई काम याद आया, तो योगयुक्त नहीं हो, फेला। बाबा के दिल से हमको पास मार्क्स नहीं मिलेगी।



राजयोगिनी दादी जानकी जी